(सर्वाधिकार सुरक्षित)

श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

मूल ग्रन्थ (गाथा) कर्ता:—
परमपूज्य श्री मन्नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती

द्रव्यसंग्रह

की प्रश्नोत्तरी टीका

प्रवक्ता:
अध्यात्मयोगी सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री, न्यायतीर्थ
पूज्य श्री गुरुवर्य्य मनोहर जी वर्णी
"श्रीमत्सहजानन्द महाराज"

भारतीय श्रुति-दर्शन केन्द्र
जयपुर

प्रकाशक:
खेमचन्द जैन सर्राफ,
मंत्री, श्री सहजानन्द शास्त्रमाला
१८५ ए, रणजीतपुरी, सदर मेरठ (उत्तर प्रदेश)

स्वाध्यायार्थी बन्धु, मन्दिर एवं लाइब्रेरियोंको
भारतवर्षीय वर्णी जैनसाहित्य मन्दिरकी ओरसे अर्धमूल्यमे।

द्वितीय संस्करण १०००] सन् १९७६ [लागत १०) रु०

श्री सहजानन्द शास्त्रमालाके संरक्षक

(१) श्रीमान् ला० महावीरप्रसाद जी जैन, बैंकर्स, संरक्षक, अध्यक्ष एवं प्रधान ट्रस्टी, सदर मेरठ
(२) श्रीमती सौ० फूलमाला देवी, धर्मपत्नी श्री ला० महावीरप्रसाद जी जैन, बैंकर्स, सदर मेरठ
(३) श्रीमान् लाला लालचन्द विजयकुमार जी जैन सर्राफ, सहारनपुर

श्री सहजानन्द शास्त्रमालाके प्रवर्तक महानुभावों की नामावली—

१	श्रीमान् सेठ भवरीलाल जैन पाण्ड्या,	झूमरीतिलैया
२	,, वर्णीसघ ज्ञानप्रभावना समिति, कार्यालय,	कानपुर
३	,, कृष्णचन्द जी जैन रईस,	देहरादून
४	,, सेठ जगन्नाथ जी जैन पाण्ड्या,	झूमरीतिलैया
५	श्रीमती सोवती देवी जी जैन,	गिरिडीह
६	श्रीमान् मित्रसैन नाहरसिहजी जैन,	मुजफ्फरनगर
७	,, प्रेमचन्द ओमप्रकाश, प्रेमपुरी,	मेरठ
८	,, सलेखचन्द लालचन्द जी जैन,	मुजफ्फरनगर
९	,, दीपचन्द जी जैन रईस,	देहरादून
१०	,, बारूमल प्रेमचन्द जी जैन,	मसूरी
११	,, बाबूराम मुरारीलाल जी जैन,	ज्वालापुर
१२	,, केवलराम उग्रसैन जी जैन,	जगाधरी
१३	,, सेठ गैंदामल दगडूशाह जी जैन,	सनावद
१४	,, मुकुन्दलाल गुलशनराय जी, नई मडी,	मुजफ्फरनगर
१५	श्रीमती धर्मपत्नी बा० कैलाशचन्द जी जैन,	देहरादून
१६	श्रीमान् जयकुमार वीरसैन जी जैन,	सदर मेरठ
१७	,, मत्री, जैन समाज,	खण्डवा
१८	,, बाबूराम अकलकप्रसाद जी जैन,	तिस्सा
१९	,, विशालचन्द जी जैन रईस,	सहारनपुर
२०	,, बा० हरीचन्दजी ज्योतिप्रसाद जी जैन, ओवरसियर,	इटावा
२१	श्रीमती सौ० प्रेमदेवी शाह सुपुत्री बा० फतेलाल जी जनसघी,	जयपुर
२२	,, मत्राणी, दिगम्बर जैन महिला समाज,	गया
२३	श्रीमान् सेठ समल जी पाण्ड्या,	गिरिडीह
२४	,, बा० गिरनारीलाल चिरजीलाल जी जैन,	,,
२५	,, बा० राधेलाल कालूराम जी मोदी,	,,

२६ श्रीमान् सेठ फूलचन्द बैजनाथ जी जैन, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर
२७ ,, मुखबीरसिंह हेमचन्द जी सर्राफ, बड़ौत
२८ ,, गोकुलचद हरकचद जी गोधा, लालगोला
२९ ,, दीपचद जी जैन रिटायर्ड सुप्रिन्टेन्डेन्ट इजीनियर, कानपुर
३० ,, मत्री, दि० जैनसमाज, नाई की मडी, आगरा
३१ श्रीमती सचालिका, दि० जैन महिलामडल. नमककी मडी. ,,
३२ श्रीमान् नेमिचन्द जी जैन, रुडकी प्रेस, रुड़की
३३ ,, झब्बनलाल शिवप्रसाद जी जैन, चिलकाना वाले, सहारनपुर
३४ ,, रोशनलाल के० सी० जैन, ,,
३५ ,, मोल्हडमल श्रीपाल जी, जैन, जैन वेस्ट ,,
३६ ,, बनवारीलाल निरंजनलाल जी जैन, शिमला
३७ ,, सेठ शीतलप्रसाद जी जैन, सदर मेरठ
३८ दिगम्बर जैनसमाज गोटे गाँव
३९ श्रीमती माता जी धनवती देवी जैन, राजागज, इटावा
४० श्रीमान् ब्र० मुख्त्यारसिंह जी जैन, "नित्यानन्द" रुडकी
४१ ,, लाला महेन्द्रकुमार जी जैन, चिलकाना
४२ ,, लाला आदीश्वरप्रसाद राकेशकुमार जैन, ,,
४३ ,, हुकमचद मोतीचद जैन, सुलतानपुर
४४ ,, ला० मुन्नालाल यादवराय जी जैन, सदर मेरठ
४५ ,, इन्द्रजीत जी जैन, वकील, स्वरूपनगर, कानपुर
४६ श्रीमती कैलाशवती जैन, ध० प० चौ० जयप्रसाद जी, सुलतानपुर
४७ श्रीमान् * गजानन्द गुलाबचन्द जी जैन, बजाज, गया
४८ ,, * बा० जीतमल इन्द्रकुमार जी जैन छाँवडा, झूमरीतिलैया
४९ ,, * सेठ मोहनलाल ताराचन्द जी जैन वडजात्या, जयपुर
५० ,, * बा० दयाराम जी जैन आर एस. डी ओ. सदर मेरठ
५१ ,, × जिनेश्वरप्रसाद अभिनन्दनकुमार जी जैन, सहारनपुर
५२ ,, × जिनेश्वरलाल श्रीपाल जी जैन, शिमला

नोटः—जिन नामोंके पहले * ऐसा चिन्ह लगा है उन महानुभावोकी स्वीकृत सदस्यताके कुछ रुपये आ गये है, शेष आने है तथा जिन नामोंके पहले × ऐसा चिन्ह लगा है उनकी स्वीकृत सदस्यताका रुपया अभी तक कुछ नही आया, सभी बाकी है।

आत्म-कीर्तन

अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री शान्तमूर्ति पूज्य श्री मनोहरजी वर्णी
"सहजानन्द" महाराज द्वारा रचित

हूं स्वतन्त्र निश्चल निष्काम । ज्ञाता द्रष्टा आतमराम ।।टेक।।

अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यह रागवितान ।
मैं वह हूं जो है भगवान, जो मैं हूं वह हैं भगवान ।।१।।

मम स्वरूप है सिद्ध समान, अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान ।
किन्तु आशवश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान ।।२।।

सुख दुःख दाता कोइ न आन, मोह राग दुःख की खान ।
निजको निज परको पर जान, फिर दुःखका नहिं लेश निदान ।।३।।

जिन, शिव ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम ।
राग त्यागि पहुंचू निज धाम, आकुलताका फिर क्या काम ।।४।।

होता स्वयं जगत परिणाम, मै जगका करता क्या काम ।
दूर हटो परकृत परिणाम, 'सहजानन्द' रहूं अभिराम ।।५।।

•••○○•••

[धर्मप्रेमी बंधुओ ! इस आत्मकीर्तनका निम्नांकित अवसरो पर निम्नांकित पद्धतियों में भारतमें अनेक स्थानोंपर पाठ किया जाता है । आप भी इसी प्रकार पाठ कीजिए]

१—शास्त्रसभाके अनन्तर या दो शास्त्रोके बीचमे श्रोतावों द्वारा सामूहिक रूपमे ।
२—जाप, सामायिक, प्रतिक्रमणके अवसरपर ।
३—पाठशाला, शिक्षासदन, विद्यालय लगनेके समय छात्रो द्वारा ।
४—सूर्योदयसे एक घटा पूर्व परिवारमें एकत्रित बालक, बालिका, महिला तथा पुरुषो द्वारा ।
५—किसी भी आपत्तिके समय या अन्य समय शान्तिके अर्थ स्वरुचिके अनुसार किसी अर्थ, चौपाई या पूर्ण छंदका पाठ शान्तिप्रेमी बन्धुओ द्वारा ।